नाम:- प्रो. भूपेंद्र कुमार दुबे

महाविद्यालय:- दुर्गा महाविद्यालय,रायपुर

संकाय: - कला संकाय

पदनाम: - सहायक प्राध्यापक

विभाग:- भूगोल विभाग

विषय:- भूगोल

# शीर्षक:- "स्वास्थ्य भूगोल का विकास व उसके उपागम"

(Development and Approaches of Health Geography)

Edit with WPS Office

## स्वास्थ्य भूगोल का विकास एवं उसके उपागम

## (Devlopment and Approaches of Health Geography )

संसार में बहुत से पदार्थ बहुमूल्य है, परंतु इनमें जीवन सबसे बढ़कर है। जीवन के सम्मुख पृथ्वी भर की संपदाए तुच्छ है। यदि कोई आपसे कहे कि आप जीवन चाहते हैं, या समस्त पृथ्वी की संपदा को निश्चित रूप से आप जीवन ही कहेंगे।इसी से ही समझ में आता है, कि जीवन की सार्थकता स्वास्थ्य से है।स्वास्थ्य ठीक होने पर ही जीवन स्वर्ग की अनुभूति बन जाता है और स्वास्थ्य ठीक ना रहने पर जीवन नर्क के समान दुखदाई और भर रूपी हो जाता है। रोगी मनुष्य केवल कष्ट और पीड़ा ही नहीं भोक्ता बल्कि वह संसार के सब कार्यों में विवश और आसक्त भी हो जाता है।वह स्वयं दुख पता है और घर के सब लोगों को दुख और परेशानी में भी डालता है। स्वास्थ्य एक ऐसा अमूल्य रत्न है जिसे एक बार खोकर पुनः पाना बहुत कठिन है। इसलिए प्राचीन आदिकाल से ही "स्वास्थ्य रक्षा "विषय के रूप में इसका प्रारंभ हो चुका था। फर्क केवल इतना है कि प्राचीन काल में विस्तृत अध्ययन का विषय नहीं था।परंतु जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती गई वैसे-वैसे प्राकृतिक साधनों का दोहन होता चला गया और वर्तमान में प्राकृतिक अर्थात भौगोलिक घटकों का हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है और यही से स्वास्थ्य भूगोल शाखा या विषय का अध्ययन शुरू हो गया है।

## स्वास्थ्य भूगोल का विकास

## (Development of Health Geography)

प्रारंभिक काल में स्वास्थ्य विज्ञान में रोगों का अध्ययन शोधार्थियों द्वारा किया जा रहा था परंतु रोगों के भौगोलिक वितरण के संबंध में अभी तक कम ही अध्ययन किया गया है। विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित मनुष्यों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन ही रोगों के फैलने का कारण हैं। रोग फैलने के लिए एक विशेष प्रकार के वातावरण की आवश्यकता होती है। जिसमें जीवाणु या रोगाणु पलते - बढ़ते और वंश वृद्धि होती है। वैसे तो रोगों का अध्ययन प्राचीन समय से ही शुरू हो गया था परंतु चिकित्सा भूगोल या स्वास्थ्य भूगोल शब्द अधिक पुराना नहीं है।

**G.M.HOWE:-** चिकित्सा विज्ञान में रोगों के लक्षणों वह उनको दूर करने के उपायों

Edit with WPS Office

पर अनुसंधान कार्य किए जाते रहे हैं चिकित्सा भूगोलवेत्ता जी . एम.हॉवे ने अंतरराष्ट्रीय भूगोल संगठन आयोग बनने के पूर्व ही अपने एक शोध पत्र में चिकित्सा भूगोल के विषय में कहा था कि "**रोगों के लिए क्षेत्रीय विभिन्नता का अध्ययन आवश्यक है तथा जन्म एवं मृत्यु के लिए भौतिक, जैविक एवं सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण का प्रभावी कारण संबंध है" l** स्वास्थ्य विज्ञान के अंतर्गत प्राचीन यूनानी विद्वानों ने भी कहा है की **"यूनानी अध्ययन में धरातल जलवायु एवं अन्य पर्यावरणीय कारकों का प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है।"**

**15वी तथा 16वी शताब्दी में स्वास्थ्य भूगोल: -** मानव रोगों और विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय दशाओं संबंधित विभिन्न लेख 15वीं और 16वीं शताब्दी में लिखे गए l इसी काल में चिकित्सा भूगोल के नए आयाम खोले गए। एक खोजकर्ता दल पूर्ण रूपेण स्वास्थ्य के साथ विश्व के विभिन्न हिस्सों में गया और वहां से वस्तुओं एवं विचारों के साथ संचारी रोगों जैसे :- प्लेग, चेचक, कालरा आदि साथ लाए l कहा जाता है कि कोलंबस नमक अमेरिकी खोज करने के क्रम में अपने साथ सिफलिस रोग साथ लाया इस प्रकार क्षेत्रीय विभिन्नता विकारों के रोगों की उत्पत्ति के लिए जिम्मेदार होती है l

**17वी 18वी शताब्दी में स्वास्थ्य भूगोल :-** 15वीं एवं 16वीं शताब्दी में चिकित्सा भूगोल शुरू होने के साथ 17वीं एवं 18वीं शताब्दी में इस दिशा में कुछ और अधिक प्रगति हुई। जब चिकित्सा भूगोल के संबंध में कुछ पुस्तकों का प्रकाशन हुआ l जिन लोगों ने नवीन भूमि की यात्रा की उन्होंने पुस्तकों का लेखन किया l इनमें से डेनी ड्रेकर ने मिसिसिपी घाटी का चिकित्सा भूगोल(1850- 59) ,पिक ने ग्रामीण चिकित्सकों द्वारा एक चिकित्सा भूगोल(1792- 95) एवं जर्मनी चिकित्साशास्त्री फिनके ने चिकित्सा भूगोल के संबंध में बड़ी मात्रा में समंक एकत्रित करके उनके तीन खंडों में पुस्तक आकार में प्रकाशन कराया। इस पुस्तक का नाम उन्होंने **मेडिकल ज्योग्राफी** दिया l

**19वी शताब्दी में स्वास्थ्य भूगोल: -** 19वीं शताब्दी में विद्वानों ने चिकित्सा भूगोल के क्षेत्र में रोगों के विषाणुओं की तलाश करने पर अधिक जोर दिया l 1950 के बाद रोगों के विषाणुओं के पालन- पोषण में भौगोलिक दशाओं को उत्तरदायी ठहराया जाने लगा l जर्मनी में सन 1952 - 56 के मध्य विश्व की महामारियों की एक एटलस या मानचित्र

Edit with WPS Office

तीन खंडों में प्रकाशित हुई। इस एटलस का संपादन राडिन बाल्ट ने किया था। इसके पश्चात संयुक्त राज्य अमेरिका के भूगोलवेत्ता जे.एम.में का आधुनिक चिकित्सा भूगोल का जनक माना जाता है। जिन्होंने अमेरिका भौगोलिक समिति के सहयोग से रोगों की मानचित्र निम्न तीन खंडों में प्रकाशित कराई :- (अ) मानवीय रोगों की पारिस्थितिकी - 1958 (ब) रोग पारिस्थितिकी में अध्ययन- 1961 (स) सुदूर पूर्व वह निकट पूर्व में कुपोषण की पारिस्थितिकी - 1961

आधुनिक समय में चिकित्सा भूगोल के विकास में ब्रिटिश भूगोलवेत्ता **A T.A. Learmonth** ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके द्वारा लिखे गए लेख अनेक भौगोलिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। **Learmonth** द्वारा 1976 में लिखा निबंध **'Models and Medical Geography** 'सागर विश्वविद्यालय के भूगोलवेत्ता प्रोफेसर वी.सी .मिश्रा द्वारा संपादित पुस्तक व्यापारिक भूगोल में, 1985 में लिखा गया लेख ,'**Medical Geography in Indo- Pakistan** 'भारतीय भूगोल पत्रिका में तथा 1996 में लिखा गया लेख **So You Want to be a medical Geography** 'चेन्नई की भारतीय भूगोलवेत्ताओ की समिति की पत्रिका के स्वर्ण जयंती विशेषांक में छपा था।

## भारत में चिकित्सा भूगोल का विकास

## (Development of Health Geography in India)

भारत में 600 ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी तक औषधि निर्माण का महत्वपूर्ण समय बताया जाता है। **बनारस और तक्षशिला** चिकित्सा के प्रमुख केंद्र थे। अनेक पुस्तक एवं लेख चिकित्सा पर लिखे गए जिसका विस्तृत वर्णन वेदों में उल्लेखित है। इस समय सुश्रुत एक महान सर्जन थे जिन्होंने " शल्य तंत्र "नामक ग्रंथ लिखा। **ऑस्ट्रिया तक्षशिला में औषधिक विज्ञान के प्रोफेसर थे। उन्हें भारत का औषधि विज्ञान का जनक कहा जाता है**। संभवत भारत में प्रथम विदेशी वैज्ञानिक **क्लेलैंड** एवं इसके बाद **मैंकनमारा** ने भारत में क्षेत्रीय कारको को पहचानने का कार्य किया और पाया की भौगोलिक कारक अनेक प्रकार के रोगों को प्रभावित करते हैं विशेष रूप से हिमालय एवं उप हिमालय क्षेत्र में **कंठमाल रोग** के लिए। इसके अतिरिक्त **जोसेफ फायर ने "भारत में जलवायु एवं बुखार" तथा चीवर्स एवं मोर ने " भारत के रोग एवं**

Edit with WPS Office

**ध्रुवीय जलवायु एवं भारतीय रोग"** आदि दिशाओं में कार्य कर विशेष सहयोग दिया। भारत में चिकित्सा भूगोल का आरंभ 1930 से माना जाता है। इस समय भारत के भूगोल विषय में यह शाखा अविकसीत रूप में थी। **कैप्टेन हेस्टर** को द्वारा प्रथम शोध कार्य किया गया।उन्होंने 1929 में दक्षिण भारत में रोगों का संबंध पर्यावरण दशाओं से निरूपित किया। इसके पश्चात **गेडेस ने "जनसंख्या वृद्धि और स्वास्थ्य की सामान्य दशाओं"** का संबंध स्थापित कर सहयोग दिया।डॉक्टर ए. टी .ए लियरमोंथ ने चिकित्सा भूगोल को वैज्ञानिक आधार दिया। जिसमें अनेक शोधार्थियों ने इस क्षेत्र में अनेक शोध कार्य किए। सन 1968 में नई दिल्ली में संपन्न 21वीं अंतर्राष्ट्रीय भौगोलिक परिषद की बैठक में अनेक भूगोलवेताओं ने चिकित्सा भूगोल के संबंध में अपने लेख प्रस्तुत किया।

1970 में भूगोल्वेत्ता **डॉ .आर ,.पी .मिश्रा ने "भारत का चिकित्सा भूगोल "** नामक पुस्तक लिखी। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के भूगोलवेत्ता प्रोफेसर सैयद साजिद हुसैन जैदी ने **" Rural India and Malnutrition Implemention Problem and Prospects"** विषय पर शोध कार्य किया। 1**985 में प्रोफेसर रईस अख्तर एवं प्रोफेसर ए . टी.ए.लियरमंथ** ने संयुक्त रूप से **Geographical Aspect of Health and Diseases in India** नामक पुस्तक का संपादन किया। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में पोषण की कमी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों के संबंध में शोध कार्य चल रहा है। भारत में इस शाखा को अलग से क्षेत्र नहीं मिल पा रहा है। इसे अन्य शाखों के साथ जोड़ा जाता है। स्वास्थ्य भूगोल का बढ़ता महत्व देखते हुए वर्तमान समय में भारत के अनेक विश्वविद्यालय जैसे - मुंबई कोलकाता, चेन्नई, पुणे ,कोल्हापुर, आगरा ,सागर, ग्वालियर ,उज्जैन, जबलपुर, भोपाल, रीवा ,रायपुर आदि के स्नातकोत्तर भूगोल कक्षाओं के पाठ्यक्रमों में स्वास्थ्य भूगोल का **विषय चलाया जा रहा है।**

**स्वास्थ्य भूगोल के अध्ययन के उपागम (Approaches of Health Geography):-**

**( 1) स्वास्थ्य एवं बीमारियां (Health and Diseases):-** स्वस्थ मानव की जो अस्पष्ट दशा है। जिसकी व्याख्या करना कठिन है। एक व्यक्ति पूर्ण रूप से अस्वस्थ हो सकता है, परंतु पूर्ण रूप से स्वस्थ कभी नहीं।एक कहावत है कि "**स्वास्थ्य पर**

Edit with WPS Office

**बीमारियां निर्भर होती है, बीमारियों पर स्वास्थ्य नहीं ।**"अतः एक स्वस्थ व्यक्ति में साधारण रोग नहीं होते या कम होते हैं परंतु अस्वस्थता रोग का घर होता है । कोई भी रोग छोटा नहीं होता उसके लक्षणों के आधार पर उचित परामर्श या उपचार करना ।

**(2) भोजन- पोषण एवं स्वास्थ्य;-** भोजन मानव की परम आवश्यकता है ।मानव को स्वस्थ रहने के लिए पर्याप्त एवं उचित मात्रा में आहार लेना आवश्यक होता है। उचित आहार का आशय संतुलित भोजन से है संतुलित भोजन में प्रोटीन ,वसा ,कार्बज, खनिज, एवं विटामिन की पर्याप्त मात्रा होनी चाहिए । वैज्ञानिक अध्ययनों से सिद्ध हो गया है कि उत्तम पोषण आहार का एक बुनियादी अंग है । पोषण से स्वास्थ्य में वृद्धि और विकास ,विशिष्ट प्रकार की कमी से छुटकारा, संक्रमण का प्रतिरोध एवं मृत्यु दर एवं रुगनता दर में कमी आती है। अतः कुपोषण से बचने के लिए भोजन में पोषक तत्वों की उपस्थिति आवश्यक है ।

**(3,) पर्यावरण एवं स्वास्थ्य (Environment and Health,):-** जैविक ,अजैविक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक- यह समस्त बाहय तत्व जो मनुष्य को घेरे हुए हैं वातावरण के अंतर्गत शामिल होते हैं । जैविक पर्यावरण पूर्णतः प्रकृति द्वारा प्रदत्त है शेष मानव निर्मित है। जिसे सांस्कृतिक पर्यावरण भी कहते हैं । यह क्षेत्र भौतिक, पर्यावरण की अपेक्षा सांस्कृतिक पर्यावरण से अधिक प्रभावित होते हैं ।ऐसे क्षेत्रों में जल ,वायु ,मिट्टी आदि अपना भौतिक स्वरूप होकर प्रदूषित होने लगते हैं। उद्योग यातायात के साधन कीटनाशक दवाइयां आदि से गैस ,अम्ल, लवण , बालूकाण निकालकर जल, वायु, एवं मिट्टी को प्रदूषित करते हैं । प्रदूषण जल में सड़ने वाले कार्बनिक पदार्थ और रोगात्मक तत्व होते हैं। जो उदर विकार एवं पाचन संस्थान को प्रभावित करते हैं । इसी प्रकार दूषित वायु से श्वसन प्रणाली को संक्रमित करती है, तथा दूषित मिट्टी में नाना प्रकार की विकृतियों होते हैं, जो जल एवं वायु में मिलकर मानव पर दुष्ट प्रभाव डालते हैं ।

**(4)स्वास्थ्य सेवा प्रदाय तंत्र (हेल्थ Care Services,):-** रोग किसी भी आयु में , किसी भी समय उत्पन्न हो सकते हैं ।इस प्रकार की बीमारियां प्रतिवर्ष विश्व के प्रत्येक हिस्से में देखने को मिलती है । इन रोगों की रोकथाम एवं उपचार हेतु शासकीय ,निजी संस्थाओं, एवं विदेशी संस्थाओं द्वारा अनेक प्रकार की स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती है ।

Edit with WPS Office

Edit with WPS Office